ग) चित्रकला घ) हस्त शिल्प कलाएँ

6. निष्पादन कलाएँ :

क) संगीत कला ख) नृत्य कला

ग) वाद्य कला

7. लोक संस्कार एवं परम्पराएं
8. हिमाचली पहाड़ी भाषा, बोलियाँ व लिपियाँ
9. हिमाचल की सांस्कृतिक धरोहर का संरक्षण एवं संवर्द्धन

शोध पत्र सम्बन्धी आवश्यक तिथियां

शोध पत्र सारांश प्राप्ति : 31 मार्च, 2024

विस्तृत शोध पत्र प्राप्ति : 20 अप्रैल, 2024

पंजीकरण शुल्क

शोध पत्र लेखक विद्वान : रु. 1000.00

शोधार्थी : रु. 500.00

विद्यार्थी : : रु. 200.00

खाता नाम : ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान

खाता संख्या : **11500210001851**

यूको बैंक, हमीरपुर, हि.प्र.

आईएफएससी कोड : **UCBA0001150**

UPI-ID : **11500210001851@ucobank**

आवास एवं भोजन

प्रतिभागी विद्वानों तथा शोधकर्त्ताओं के आवास एवं भोजन की व्यवस्था संस्थान द्वारा की जाएगी। स्थानीय यातायात की व्यवस्था शोध संस्थान आवश्यकतानुसार उपलब्ध करवाएगा।

शोध पत्रों का प्रकाशन

शोध संस्थान परिसंवाद में प्रस्तुत उच्च गुणवत्ता वाले शोध पत्रों को (हिंदी और अंग्रेजी) प्रकाशित करेगा। लेख आदर्श रूप से उचित संदर्भों और टिप्पणियों के साथ 3000-5000 शब्दों में लिखा होना चाहिए। हिंदी में शोध पत्रों का फॉन्ट **Kruti dev 010**, आकार 14 और अंग्रेजी के लिए फॉन्ट **Times New Roman** आकार 12 में होना चाहिए। शोध सारांश और शोध पत्रों को **seminarneri@gmail.com** पर ईमेल द्वारा भेज सकते हैं।

मार्गदर्शक मण्डल

श्री विजय मोहन कुमार पुरी - अध्यक्ष, इतिहास शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर

प्रो. कुलदीप चन्द अग्निहोत्री - कार्यकारी उपाध्यक्ष, हरियाणा साहित्य एवं संस्कृति अकादमी

प्रो. बसन्त शिंदे - पूर्व कुलपति, डेक्कन कॉलेज, पुणे

डॉ. चेतराम गर्ग - निदेशक, इतिहास शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर

प्रो. सत प्रकाश बंसल - कुलपति, हिमाचल प्रदेश केन्द्रीय विश्वविद्यालय धर्मशाला

प्रो. देव दत्त शर्मा - पूर्व कुलपति, सरदार पटेल विश्वविद्यालय मण्डी हि.प्र.

डॉ. सूरत ठाकुर - अध्यक्ष, अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना हिमाचल प्रान्त

श्री भूमिदत्त शर्मा - महासचिव, इतिहास शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर

प्रो. भाग चन्द चौहान - निदेशक-वैचारिक पक्ष एवं अध्यक्ष शोध परिषद्

प्रो. कंवर चन्द्रदीप - सचिव, शोध परिषद्, इतिहास शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर

प्रो. सुहणु राम शर्मा - सेवानिवृत्त आचार्य, डेक्कन कॉलेज, पुणे

प्रो. नारायण सिंह राव - आचार्य, इतिहास विभाग, हि.प्र.के. विश्वविद्यालय धर्मशाला

प्रो. ओम प्रकाश शर्मा - आचार्य, इतिहास शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर

आयोजन समिति

श्री जगबीर चंदेल
प्रो. मृदुला शारदा
प्रो. धर्मचन्द चौबे
डॉ. अंकुश भारद्वाज
डॉ. बी.आर. ठाकुर
डॉ. कृष्ण मोहन पाण्डेय
डॉ. दायक राम ठाकुर
डॉ. अरुण गुलेरिया
डॉ. राकेश कुमार शर्मा
श्री देशराज शर्मा
डॉ. शिव भारद्वाज
डॉ. राजकुमार
डॉ. मनोज शर्मा
डॉ. राघवेन्द्र यादव
डॉ. जे.पी. शर्मा
डॉ. कैलाश चन्द गुर्जर
डॉ. सुशील कुमार कोटनाला
डॉ. बिन्दु साहनी
डॉ. ज्योति
डॉ. विवेक शर्मा
श्रीमती राम्या ऐरी
श्री राजेन्द्र कुमार
डॉ. विवेक शर्मा
श्री महेन्द्र
श्री विजय ठाकुर
श्री सुरेश कुमार
श्री शशि शर्मा
डॉ. रामपाल
डॉ. खीम सिंह
श्री ऋषि भारद्वाज
श्री लक्की शर्मा

पत्राचार पता :

ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान

गांव व डा. नेरी, जिला हमीरपुर (हि.प्र.)- 177001

ई-मेल : seminarneri@gmail.com,

दूरभाष : 01972-262905, 89881-66570

भारतीय इतिहास अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली

द्वारा प्रायोजित

राष्ट्रीय परिसंवाद

हिमाचल प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर

कलियुगाब्द 5126, विक्रमी संवत् 2081 तदनुसार

04-05 मई, 2024

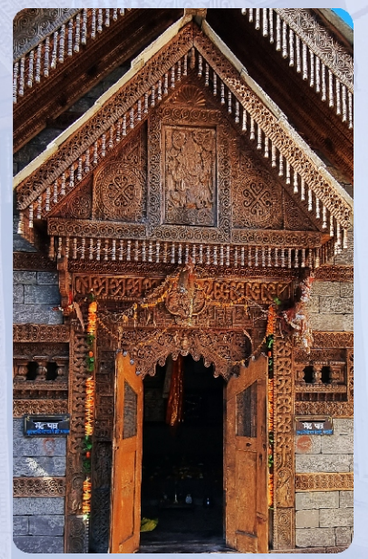

आयोजक

ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान

गांव व डा. नेरी, जिला हमीरपुर (हि.प्र.)- 177001

आयोजन सचिव
बारू राम ठाकुर
सहायक आचार्य, इतिहास विभाग
राजकीय महाविद्यालय नाहन, सिरमौर (हि.प्र.)

संयोजक
डॉ. कर्म सिंह
पूर्व सचिव, हिमाचल कला संस्कृति
भाषा अकादमी, शिमला (हि.प्र.)

ठाकुर राम सिंह इतिहास शोध संस्थान नेरी (हमीरपुर)

ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान, हिमाचल प्रदेश के हमीरपुर जिला में शिवालिक की हरी-भरी घाटी में, कुनाह नदी के तट पर स्थित है। संस्थान इतिहास, संस्कृति और समाज विज्ञान के विविध क्षेत्रों में मौलिक और अनुभवजन्य अनुसंधान के लिए समर्पित है। यह भारतीय इतिहास में महत्वपूर्ण घटनाओं की कथित व्याख्याओं को मूलभूत, वैकल्पिक और भारतीय परिप्रेक्ष्य प्रदान करने के लिए प्रयासरत है। संस्थान की परिकल्पना और स्थापना भारतीय ज्ञान परम्परा के गुरुकुल मॉडल पर की गई है, साथ ही संस्थान शैक्षणिक गतिविधियों के लिए पर्याप्त सुविधाएं प्रदान करता है। संस्थान में आने वाले शोधकर्त्ताओं और शिक्षाविदों को एक समृद्ध पुस्तकालय, वाचनालय तथा सुसज्जित सम्मेलन कक्ष और आवासीय सुविधा प्रदान की जाती है। शोध संस्थान तक देश के सभी प्रमुख शहरों से सड़क मार्ग द्वारा पहुंचा जा सकता है। ऊना निकटतम रेलवे स्टेशन है, जो लगभग 56 किलोमीटर या डेढ़ घंटे की दूरी पर है और निकटतम हवाई अड्डा गग्गल, कांगड़ा है जो 80 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

राष्ट्रीय परिसंवाद की भूमिका

संस्कृति मानव सभ्यता की आत्मा और गतिशीलता की द्योतक है। यह एक ऐसा दर्पण है जो पुरातन की अमूल्य धरोहर के प्रतिबिम्ब को वर्तमान और भावी पीढ़ियों तक पहुंचाता है। मनुष्य जब अपने अतीत को खोजता है तो वास्तव में वह अपनी संस्कृति के उन अमिट अवशेषों को तलाशता है जिससे निरन्तरता का बोध पाकर स्वयं को गौरवान्वित महसूस कर सके। मानव सभ्यता की सम्पूर्ण यात्रा में केवल संस्कृति के मूर्त व अमूर्त अवशेष ही उसके जीवंत होने के प्रमाण हैं और यही अमूल्य संपदा विरासत के रूप में पीढ़ी-दर-पीढ़ी गतिशील है। संस्कृति की अविरल धारा ही मानव सभ्यता के भूतकाल को वर्तमान तक प्रवाहित करती है और भविष्य की सुखद यात्रा सुनिश्चित करती है।

हिमाचल प्रदेश पश्चिमी हिमालय में अवस्थित है। हिमालय को विद्वानों ने संस्कृति का सुमेरु कहा है और इसकी गोद में बसा हिमाचल प्रदेश भी अपने विशिष्ट भौगोलिक स्वरूप व प्राकृतिक छटाओं के कारण सांस्कृतिक विविधता का पालना है। हिमालय की विभिन्न पर्वत शृंखलाओं, पहाड़ियों, पठारों, तराई क्षेत्रों और नदी-घाटियों के मध्य मानव बसावटों में विशिष्ट व समृद्ध संस्कृति का जन्म हुआ और नैसर्गिक रूप में फली फूली। हिमालयी संस्कृति की विकास यात्रा में प्रजापति मनु, ऋषियों और मुनियों के वैचारिक चिंतन ने भौतिक एवं आध्यात्मिक सामजस्य का बेजोड़ व श्रेष्ठ कलात्मक स्वरूप स्थापित किया। यहाँ कोस-कोस पर पानी भी बदलता है, वाणी भी बदलती है और लोक संस्कृति में भी बदलाव दृष्टिगोचर होता है। यहाँ आदिकाल से देव, असुर, आर्य, अनार्य, गंधर्व, यक्ष, किन्नर, नाग, खश, कोल और किरात आदि की सामाजिक एवं दैविक विकास की यात्राओं का गान लोक गीतों और लोक गाथाओं में जीवंत है। यहाँ की संस्कृति इसके सामाजिक रहन-सहन, खान पान, वस्त्राभूषण, मेले त्यौहारों, शिल्प एवं निष्पादन कलाओं, धार्मिक मान्यताओं, लोक साहित्य, भाषा व बोलियों के मौलिक पक्ष में अंतर्निहित है। हिमाचल की संस्कृति को देव संस्कृति की संज्ञा इसलिए प्रदत है क्योंकि यह विशुद्ध रूप से उस आलौकिक शक्ति का पुंज है जिसके दिव्य प्रकाश में यहाँ की लोक संस्कृति का ताना बाना बुना हुआ है और कालचक्र के कठिन दौर में भी अपने मौलिक तत्वों के बहुरंग को सुरक्षित रखने में कामयाब हुई है।

हिमाचल ने ऋग्वेद में वर्णित नदियों, पर्वतों, शिखरों और सघन वनों में पुरा-ऐतिहासिक चरण से पूर्व पाषाण काल, मध्य पाषाण काल, कांस्य युग, सरस्वती-सिन्धु सभ्यता, वैदिक युग, उत्तर वैदिक युग, मौर्य साम्राज्य, शक, कुषाण, गुप्त काल, हर्षवर्धन काल, राजपूत काल तथा मुगलों और ब्रिटिश साम्राज्यवादी शक्तियों से जूझते हुए यहां की सतरंगी सांस्कृतिक धारा को विकसित होते हुए देखा है। यहाँ ठेठ पहाड़ी, कबिलाई और मैदानी संस्कृति का मिश्रित समागम एक साथ देखा जा सकता है। हिमाचल में गाँव, जिले, राज्य, राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय मेले व पर्वो में सिरमौरी, कुल्लवी, मण्डीयाली, बघाटी, चम्बियाली, महासुवी, किन्नौरी, लाहुली, गद्दी व भोटी लोक संस्कृति का जीवंत मौलिक स्वरूप प्रदेश के मूर्त और अमूर्त विरासत के रूप में आज भी विद्यमान हैं जिसे समृद्ध व संरक्षित करना वर्तमान पीढ़ी का दायित्व है। हिमाचल की इसी महान सांस्कृतिक धरोहर पर ठाकुर रामसिंह इतिहास शोध संस्थान नेरी, हमीरपुर दो दिवसीय राष्ट्रीय परिसंवाद आयोजित करने जा रहा है।

राष्ट्रीय परिसंवाद के उद्देश्य :

1. हिमाचल की विविध, समृद्ध व विशिष्ट सांस्कृतिक धरोहर के संदर्भ में गहन शोध द्वारा अनछुए पहलुओं को उजागर करना और शोधार्थियों को इस कार्य क्षेत्र की ओर आकर्षित करना।
2. प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर के मूर्त, अमूर्त व प्राकृतिक रूपों को प्रकाश में लाकर इसके संरक्षण व संवर्धन हेतु जनमानस में जागरूकता उत्पन्न करना।
3. प्रदेश की बहुआयामी संस्कृति के बहुरंगों को वैश्विक पटल पर उजागर कर सांस्कृतिक पर्यटन को बढ़ावा देना।
4. हिमाचल प्रदेश की अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर के प्रति देश व विश्व का ध्यान आकर्षित करना। प्रदेश की अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर के भविष्य में संरक्षण व संवर्धन हेतु सार्थक सांस्कृतिक नीति निर्धारण के लिए प्रदेश सरकार को सुझाव प्रस्तुत करना।

परिसंवाद में हिमाचल की सांस्कृतिक धरोहर के निम्न मुख्य बिन्दुओं पर विद्वानों तथा शोधार्थियों के सारगर्भित लेख व प्रस्तुति आमंत्रित है –

उप- विषय :

1. हिमाचल की संस्कृति के मौलिक पक्ष
2. हिमाचल की संस्कृति में प्रकृति व पर्यावरण तत्त्व
3. देव संस्कृति व परम्पराः
   - क) पूजित लोक देवी देवता
   - ख) ऋषि परम्परा
   - ग) वैष्णव परम्परा
   - घ) शैव परम्परा
   - ङ) शाक्त परम्परा
   - च) सिद्ध व नाथ परम्परा
4. पारम्परिक लोक साहित्य :
   - क) लोक गीत
   - ख) कथा साहित्य
   - ग) लोक गाथाएं
   - घ) लोक नाट्य
   - ङ) लोक विद्या
   - च) लोक सुभाषित
5. ललित कलाएं :
   - क) स्थापत्य कला
   - ख) मूर्ति कला